सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी कविता के छायावादी युग के प्रमुख कवियों में से एक थे। हिन्दी साहित्य के सर्वाधिक चर्चित साहित्यकारों में से एक सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1896 ई. में पश्चिम बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल ग्राम में हुआ था। निराला जी का जन्म रविवार को हुआ था इसलिए सूर्यकान्त कहलाए। मूल निवास उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले का गढकोला नामक गाँव रहा था। हाई स्कूल तक हिन्दी, संस्कृत और बांग्ला का स्वतंत्र अध्ययन किया।

उन्होंने कोलकाता से प्रकाशित 'समन्वय' और 'मतवाला' पत्रिकाओं का सम्पादन किया। उन्होंने कहानियाँ, उपन्यास और निबन्ध भी लिखे हैं, किन्तु उनकी ख्याति विशेष रूप से कविता के कारण ही है। 1942 से मृत्युपर्यन्त इलाहाबाद में रहकर स्वतंत्र लेखन किया। उनके प्रसिद्ध काव्य संग्रह हैं— 'अनामिका', 'तुलसीदास', 'कुकुरमुत्ता', 'अणिमा', 'अर्चना', 'आराधना', 'बेला', 'नये पत्ते'।

वे, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत और महादेवी वर्मा के साथ हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तम्भ माने जाते हैं। 15 अक्तूबर, 1961 को इलाहाबाद में उनका निधन हुआ।

कविता सार

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का यह गीत स्मृतियों के माध्यम से अतीत को वर्तमान में लाता है। साथ ही एक दार्शनिक सन्देश भी देता है। निराला अपनी पत्नी की मृत्यु के कुछ दिनों बाद ससुराल जाते हैं। ससुराल के गाँव के पास एक नदी बहती है। संध्या को वे उस नदी के घाट पर बैठकर साँझ, नदी, तटों, पेड़ों को शान्त देखते हैं। उनके कवि मन में पत्नी के वियोग से उपजी एक भाव नदी बह निकलती है। इस गीत में वे सारी स्मृतियाँ शब्द, चित्र बनकर साकार हो जाती हैं; जो उनकी पत्नी के जीवित रहते हुए नदी और जीवन के सम्बन्धों को तरलता देती रही हैं।

इस गीत का एक आध्यात्मिक अर्थ भी है—इस जीवन रूपी नाव को संसार रूपी नदी के तट पर मत बाँधो। निराला बन्धन-मुक्ति का भी संकेत देते हैं। यह रचना नवगीत विधा का आरम्भ भावों की नवीनता, शिल्प की नवीनता और भाषा की नवीनता के आधार पर भी करती है। नवगीत विधा का आरम्भ इसी तरह की गीति रचनाओं से हुआ है।

बाँधो न नाव इस ठाँव, बंधु

बाँधो न नाव इस ठाँव, बंधु!
पूछेगा सारा गाँव, बंधु!

यह घाट वही जिस पर हँसकर,
वह कभी नहाती थी धँसकर,
आँखें रह जाती थीं फँसकर,
कँपते थे दोनों पाँव बंधु!

वह हँसी बहुत कुछ कहती थी,
फिर भी अपने में रहती थी,
सबकी सुनती थी, सहती थी,
देती थी सबके दाँव, बंधु!